राजपूतों के पतन के कारण :-

- Mamta Rani
Guest Assistant Professor.
Deptt of History.
SNSRKS COLLEGE,
SAHARSA.

09-10-2020.

• राजपूतों के पतन के कारण :-

Ans :- राजपूत जाति के लोग अत्यंत वीर और पराक्रमी योद्धा थे। अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिये वे युद्ध क्षेत्र में वीरगति प्राप्त करना बड़े सौभाग्य की बात समझते थे। परंतु इन गुणों के बावजूद वे मुसलमानों से देश की रक्षा कर सकने में असफल रहे और उन्होंने देश की स्वाधीनता को विदेशियों के हाथों सौंप दिया।

राजपूतों का पतन किसी कारण विशेष का परिणाम नहीं था, अपितु विभिन्न कारणों ने इस दिशा में अपना योगदान दिया। उनकी पराजय का सबसे पहला कारण था कि उस समय देश में राजनि-तिक एकता की कमी थी। जिसके कारण आपसी मतभेद दिन-ब-दिन बढ़ती गई और अतः पतन की शुरुआत आरंभ हो गई।

Date: / /

(1) वंश परम्परा का महत्व :-

राजपूतों में वंश-परंपरा का महत्व बहुत अधिक था। एक राजा की मृत्यु होने पर उसका पुत्र अथवा निकट सम्बंधी ही उत्तराधिकारी बनता था। इस कारण योग्य तथा अयोग्य का प्रश्न ही नहीं था। शासन पर अयोग्य व्यक्तियों का शासन हो जाता था। प्रत्येक वंश में 2-3 शासकों के अतिरिक्त अन्य शासक भोग विलासी तथा दुर्व्यसनी होते थे। वे प्रजा तथा अपने राज्य की रक्षा करने में असमर्थ रहते थे। इसके अतिरिक्त शासन की महत्वपूर्ण नियुक्तियों में भी सिद्धांत का बोलबाला था। ब्राह्मण और क्षत्रियों की मान प्रतिष्ठा अन्य वर्णों से अधिक थी। अधिकांश पद इन्हीं वर्णों के हाथ में थे। इसके कारण अन्य वर्ग राज्य के प्रति उदासीन था। राजपूतों के राजकीय नियमों में भी भेद था।

Date: / /

उनके नियमों में भी पक्षपात था। साधारण जनता को किसी प्रकार का अधिकार प्राप्त नहीं था।

२. युद्ध करने की तीव्र भावना :-

राजपूतों में युद्ध करने की तीव्र भावना थी। वे अपनी वीरता, बल का प्रदर्शन करना चाहते थे। इसके परिणाम-स्वरूप उनका अधिकांश समय युद्धों में व्यतीत होता था। वे जनसाधारण के कार्यों में विशेष रुचि नहीं लेते थे। वे अपना समय तथा धन सेना पर व्यय करते थे। युद्धों के कारण उनकी सैनिक प्रबल नहीं हो पाई। और वो मुसलमान सेना का सामना नहीं कर सके।

३. सामंत प्रथा :-

राजपूतों में सामंत प्रथा का प्रचलन था जो उनके पतन के लिये विशेष रूप

से दर्द बना। राजपूतों ने भिन्न पड़ोसी राजाओं को युद्ध में परास्त किया वे उनका उन्मूलन न कर उसके बदले वार्षिक कर का वचन लेने के बाद उनके राज्य वापिस लौटा दिये। इस प्रकार पराजित राजा सामंत रूप से ही अपने प्रदेश पर शासन करने लगे। केन्द्रिय शक्ति के शिथिल होने पर उनमें स्वतंत्रता की भावना का उदय हुआ और वे विद्रोह करने लगे। इस कारण राज्य के अंदर कलह और द्वेष का भावना पनपने लगा।

4. एकता का अभाव :-

राजपूतों में एकता का अभाव था। हर्ष की मृत्यु के बाद भारत में राजनितिक एकता का अंत हो गया। जिसके कारण भारत छोटे-2 राज्यों में बंट गया। इस राज्यों का कोई भी राजा इतना शक्तिशाली नहीं हुआ की संपूर्ण भारत पर एक छत्र स्थापित

कर सकें। इससे विदेशियों को भारत पर आक्रमण करने का प्रोत्साहन मिला। और राजपूतों की सेनायें मुसलमानों की सेनाओं के वेग को रोकने में असफल रही। घरेलु कलह में व्यस्त रहने के कारण उनकी शक्ति का पतन हो गया।

(5.) सैनिक कारण :-

(i) पैदलों की अधिक संख्या थी। वह भी आधुनिक नहीं थी। विदेश की सेना में अश्वारोहियों की संख्या अधिक थी। पैदल सैनिक अश्वारोहियों की सामना नहीं कर सकती थी।

(ii.) हाथी सेना का महत्व के कारण भी सैनिक कारण बना पतन में, क्योंकि राजपूत हाथी के सेना को सबसे आगे रखती थी लेकिन जब हाथी बिगड़ जाता था तो वो खुद के सेना को ही नष्ट कर देती

Date: / /

(iii) युद्ध शैली प्राचीन थी।

(iv) सुरक्षा सेना का अभाव था।

(v) राज्यपुतों का उच्च आदर्श।

(vi) सामाजिक दोष।

(vii) मद्यपान।

(viii) वंश का विशेष महत्व।

(ix) योग्य नेताओं का आभाव।

(x) वीरता तथा उत्साह में कमी।

निष्कर्ष :-

उपरोक्त तथ्यों के क्रमिक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि राजपूतों के हाथ में भारत की राज्य श्री थी परंतु रक्षा की अयोग्यता के कारण ही ये राज्यश्री मुसलमानों तथा विदेशियों के हाथ चली गई।